दीक्षारंभ के दौरान नवप्रवेशित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी.एस. तोमर जी एवं डॉ. संजय माहेश्वरी जी

दिनांक : 18 नवम्बर, 2024 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्य धाम सोनबरसा गोरखपुर में गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज् आयुर्वेद कालेज के नवप्रवेशित बीएएमएस विद्यार्थियों के पंचदशदिवसीय दीक्षारम्भ पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अतिथि व्याख्यान कार्यक्रम में एकीकृत स्वास्थ्य पर बीएएमएस और एमबीबीएस विद्यार्थियों से

चर्चा करते हुए विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जी. एस. तोमर ने कहा कि आप सब सौभाग्यशाली हैं कि आप महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर को चुने हैं। यह संस्थान नित नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हमारा उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण करना और रोगी को स्वस्थ करना होना चाहिए। आयुर्वेद और एलोपैथ दोनों इस दिशा में मिलकर बहुत अच्छा कर सकते हैं। ऐसा कोई वनस्पति नहीं है जिससे औषधि न बनाया जा सके। आप सभी भाग्यशाली हैं कि आपको चिकित्सा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। चिकित्सा कभी निष्फल नहीं होती है। यह आपको यश, धन, अनुभव, आशीर्वाद सब प्राप्त कराता है। सभी विधाओं का सम्मान करना चाहिए, हमें प्रतिद्वंद्वी नहीं परस्पर सहयोगी बनना चाहिए। हमारी संस्कृति पूरे विश्व को परिवार मानती है। इसीलिए पूरे वैश्विक स्तर पर हमें मोटे अनाज को अपनाना चाहिए और प्रचार–प्रसार करना चाहिए। जो पहले से हमारे वहां प्रयोग होता रहा है।

विश्व में वेद सर्वप्रथम ज्ञान विज्ञान के स्रोत हैं। अथर्ववेद का उपवेद आयुर्वेद है। यह प्राचीन चिकित्सा पद्धति आज भी प्रमाणिक और प्रसिद्ध है। आयुर्वेद में प्रत्येक व्यक्ति के प्रकृति के अनुसार अलग–अलग चिकित्सा पद्धति है इसी को तो वर्तमान में जीनोम थ्योरी कहते हैं। हजारों प्रकार के रसायनों के बारे में आयुर्वेद में बताया गया है जो स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रखाता है। डॉ. तोमर ने अपने शोध अनुभवों और इतिहास से विषकन्या का उदाहरण देकर बताया कि विष जैसी चीजों को हम थोड़े–थोड़े मात्रा देने से वह सात्म्य बन जाता है तो एलर्जी को हम क्यों नहीं ठीक कर सकते हैं।

विशिष्ट अतिथि एम पी बिड़ला ग्रुप आफ हॉस्पीटल के निदेशक और प्रसिद्ध कैंसर सर्जन डॉ. संजय माहेश्वरी ने कहा कि आज भी सर्जरी में आयुर्वेद विधा क्षार सूत्र का प्रयोग करता हूं। रक्त चिकित्सा में आदिकाल से लीच अर्थात जोंक का प्रयोग आयुर्वेद में किया जाता है।

आयुर्वेद और एलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान दोनों का उद्देश्य स्वास्थ्य है। हमें एक होकर चिकित्सा के दिशा में बढ़ना होगा। शिक्षण संस्थान सन्तों के ही भूमि पर बनते हैं। इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को बहुत बहुत धन्यवाद है।

कार्यक्रम का संचालन बीएएमएस छात्रा श्रेया सिंह ने किया। डॉ. गिरिधर वेदांतम ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, डॉ. अरविन्द कुशवाह, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. राजेश बहल, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी एबीएएमएस और एमबीबीएस के सभी नव प्रवेशित विद्यार्थी उपस्थित रहें।